

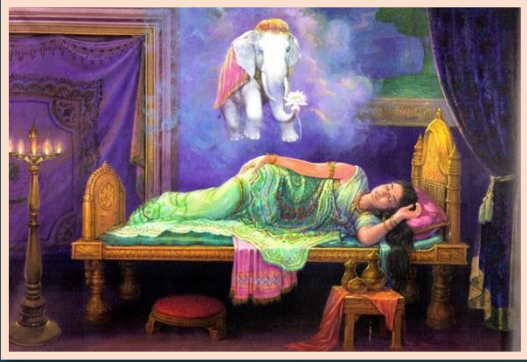
बौद्ध दर्शन



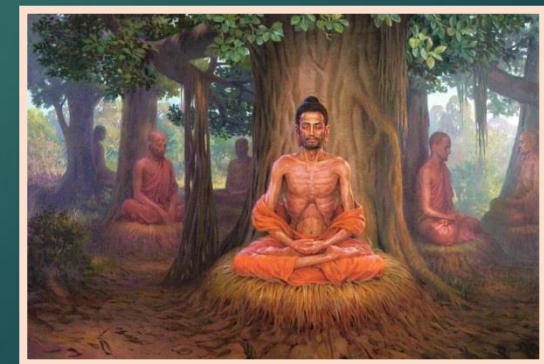
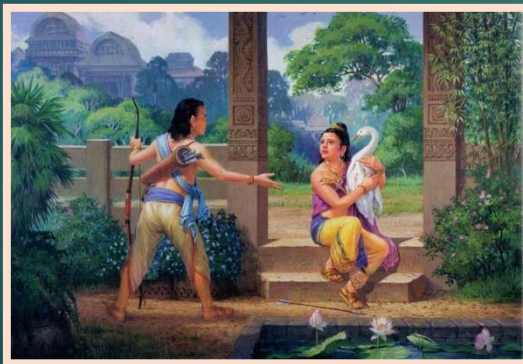
– डॉ० रत्नर्तुः मिश्रा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर



निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥



बुद्ध का प्रारम्भिक जीवन




बौद्धसाहित्य

1. विनय पिटक – संघ के नियम
2. सुत्त पिटक – बुद्ध के वार्तालाप तथा उपदेश
3. अभिधम्म पिटक – दार्शनिक विचारों का संग्रह

विवाद पराङ्मुखता

अव्याकृतानि

1. क्या यह लोक शाश्वत है?
2. क्या यह लोक अशाश्वत है?
3. क्या यह सांत है?
4. क्या यह अनंत है?
5. आत्मा तथा शरीर क्या एक है?

- 
6. क्या आत्मा शरीर से भिन्न है?
 7. क्या मृत्यु के बाद तथागत का पुनर्जन्म होता है?
 8. क्या मृत्यु के बाद उनका पुनर्जन्म नहीं होता?
 9. क्या पुनर्जन्म होता भी है, नहीं भी होता है?
 10. क्या उनका पुनर्जन्म होना और न होना, दोनों ही बातें असत्य हैं?

बुद्ध कौन?

चार आर्य सत्य

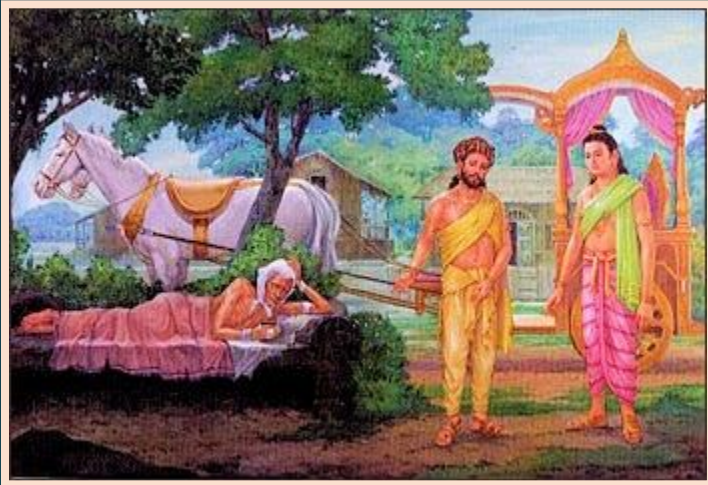
दुःख – सांसारिक जीवन दुःखों से परिपूर्ण है।

दुःख समुदाय – दुःखों का कारण है।

दुःख निरोध – दुःखों का अन्त सम्भव है।

दुःख निरोध मार्ग – दुःखों के अन्त का उपाय है।

दुःख



मनुष्य पाँच स्कन्धों का संघात मात्र है –

1. रूप
2. वेदना
3. संज्ञा
4. संस्कार
5. विज्ञान

अनात्मवाद

आत्मा नाम की कोई स्थिर वस्तु नहीं है।

प्रतीत्यसमुत्पाद

आदि और अन्त का विचार निरर्थक है। मैं धम्म का उपदेश देना चाहता हूँ।

यह शाश्वतवाद और उच्छेदवाद से अलग मध्यम मार्ग (मध्यमा प्रतिपदा) है। यही धम्म है। प्रतीत्यसमुत्पाद से ही कर्मवाद स्थापित होता है।

क्षणिकवाद

सांसारिक वस्तुयें क्षणिक हैं ।

दुःख समुदाय

द्वादश निदान (भाव चक्र)

1. अविद्या
2. संस्कार
3. विज्ञान
4. नाम—रूप
5. षडायतन
6. स्पर्श
7. वेदना
8. तृष्णा
9. उपादान
10. भव
11. जाति
12. जरा—मरण

दुःख निरोध



दुःख निरोध ही निर्वाण है ।
निर्वाण-प्राप्त व्यक्ति ही "अर्हत्"
है । निर्वाण अकर्मण्यता नहीं है ।
यह जीवन-नाश नहीं प्रत्युत दुःखों
का अन्त है ।

दुःख-निरोध-मार्ग (अष्टांगिक मार्ग)

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाक्
4. सम्यक् कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि



समाधि की अवस्थायें –

1. अपूर्व आनन्द तथा शान्ति का अनुभव
2. चित्त की स्थिरता
3. आनन्द के प्रति उदासीनता
4. पूर्ण शान्ति, पूर्ण विराग, पूर्ण निरोध की अवस्था। यही निर्वाण है।

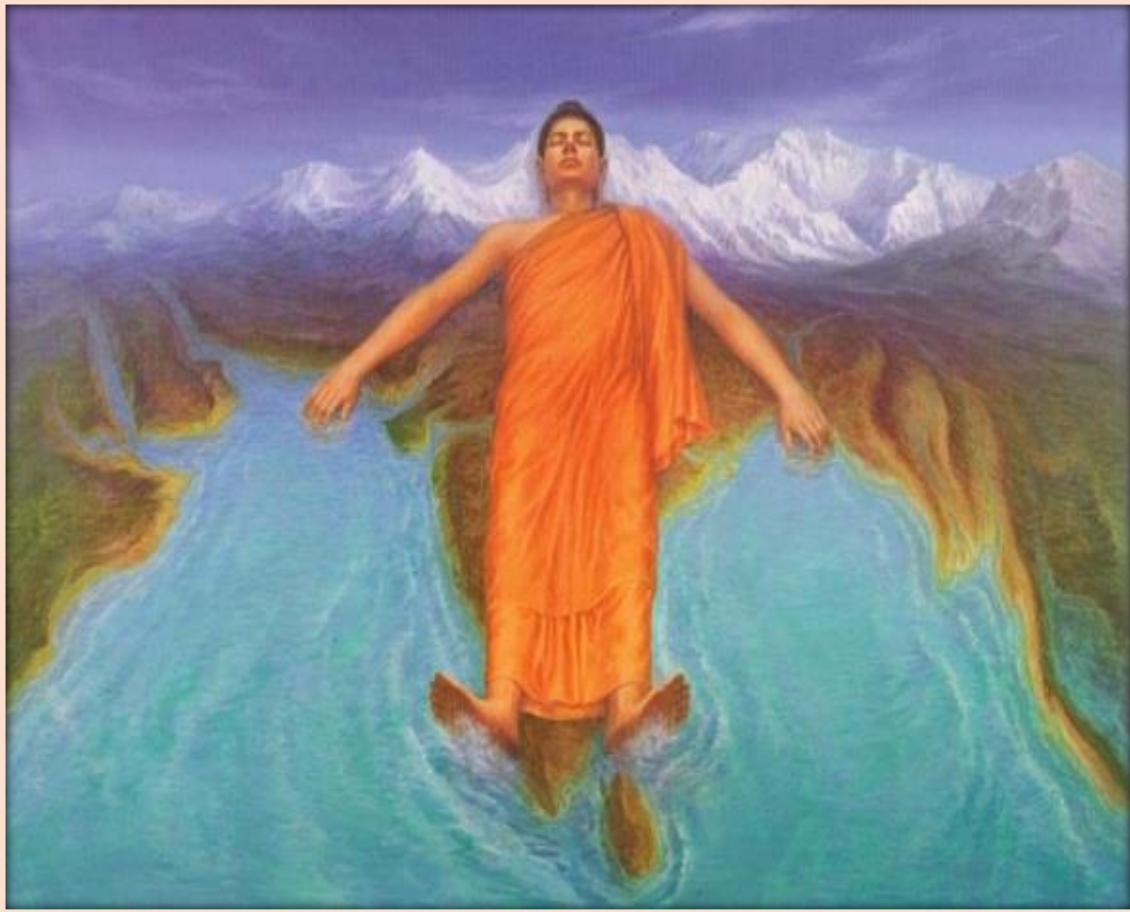
बुद्ध

शील, समाधि तथा प्रज्ञा का
उदय ही बुद्धत्व है





विजयी बुद्ध



समस्त चित्र संयोजन : सामार गूगल इमेज

विश्वहृदयसम्राट

बुद्ध

धन्यवाद